सतत एवं व्यापक मूल्यांकन

पारंपरिक शिक्षा प्रणाली पर कई प्रश्न खड़े थे जिनका समाधान खोजने का निरंतर प्रयास किया जा रहा था। और आज उसी का उत्तर है ब्ब्म अर्थात् सतत और व्यापक मूल्यांकन। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या २००५ में शिक्षा और परीक्षा प्रणाली में सुधार। बदलाव की सिफारिश की गई थी। इससे पहले भी अनेक समितियों और शिक्षा विदों ने परिवर्तन की आवश्यकता पर जोर दिया गया था। २००६ में हमारी शिक्षा व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन आया। शिक्षा से जुड़े व्यक्तियों को इसकी जानकारी बेहद जरूरी है।

किसी भी शिक्षा का उद्देश्य क्या होता है? बच्चों को समाज के लिए उत्तरदायी और श्रेष्ठ नागरिक बनाना। अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए वे आजीविका चला सकें। अभी तक वर्ष के अंत में ३ घंटे की परीक्षा ही बच्चे की क्षमता को मापने की कसौटी थी किसी कारणवश पूरे वर्ष मेहनत करने वाला छात्र वार्षिक परीक्षा में न बैठ सके तो उसका साल गया। और इस बात वा मानसिक तनाव जिसे झेलना पड़ता है वही समझ सकता है। पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था में हम अपने उद्देश्यों से कहीं भटक से गए थे। इसलिए जरूरत थी ऐसी शिक्षा की जिसमें बच्चा अपने विभिन्न कौशलों को विकसित कर सकें, ज्ञान अर्जित कर सके, जीवन मूल्यों और मानवीय आदर्शों को अपना सके। इन सबका समाधान लेकर उभरी सतत और व्यापक मूल्यांकन की पद्धति। छात्रों की समझ और ज्ञान को समृद्ध बनाने और शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कक्षा में विभिन्न अभ्यास करवाए जाने की बात को बल देने की बात कही गई न कि रटकर सीखने की। संकल्पनात्मक विकास की इस प्रक्रिया में भाषा, प्रस्तुतीकरण संकल्पनाओं और तार्किकता जैस महत्वपूर्ण बिंदुओं को संभावित किया गया है।

अधिगम की विशेषताएँ–

- • सभी बच्चे सीखने में सक्षम और प्राकृतिक रूप से प्रेरित होते हैं।
- • अधिगम की प्रक्रिया में समझ और क्षमता का विकास महत्त्वपूर्ण है।
- • अमूर्त सोच और समझ एवं प्रतिक्रिया भी अधिगम की प्रक्रिया का महत्त्वपूर्ण पक्ष है।
- • अनुभव द्वारा, चीजों को बनाकरए प्रयोग से पढ़कर, चर्चा करके, पूछकर, सुनकर, देखकर प्रतिक्रिया से, बोलकर या लिखकर आदि तरीकों से बच्चें सीखते हैं।
- • बच्चा चीजे रट सकता है परंतु इससे ज्यादा जरूरी है बोध। अधिगम वही है जब समझकर आस–पास के संसार से संबंध स्थापित कर सके।
- • अधिगम की प्रक्रिया विद्यालय तक ही सीमित नहीं है। सीखना तो निरंतर होता रहता है।
- • कला और अन्य गतिविधियाँ भी अधिगम की प्रक्रिया में सहायक होती हैं।
- • अधिगम की गति, विविधता, रोचकता आदि पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए।
- • कोई भी कार्य बच्चा यंगवत् न करे बल्कि अपनी समझ बनाकर करे।

मूल्यांकन की आवश्यकता–

मूल्यांकन के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। लेकिन जो मूल्यांकन भय, डर व चिंता का विषय हो वह सीखने की प्रक्रिया में बाधक है। अतः जब मूल्यांकन को अध्यापन–अधिगम प्रक्रिया में शामिल कर दिया जाए तो भय होगा ही नहीं। इससे सीखने की प्रक्रिया का निदान उपचार और वृद्धि की जा सकेगी। विद्यार्थी के व्यक्तित्व के सर्वोंगीण विकास के लिए शैक्षिक और सहशौक्षिक क्षेत्र को भी मूल्यांकन के दायरे में लाना जरूरी है। मूल्यांकन एक निरंतर प्रक्रिया है जिससें छात्रों की क्षमताओं और कमियों को बार–बार प्रकट कर सुधार लाने का प्रयास किया जाए।

मूल्यांकन के आधार–

- पाठ्यक्रम और उससे बाहर की सीमाओं में की गई प्रगति के बारे में सूचना एकत्र करने के विभिन्न तरीकों का उपयोग।
- सूचनाएँ एकत्र करना और इसका अभिलेखन।
- प्रत्येक छात्र की प्रतिक्रिया और सीखने के तरीके तथा ऐसा करने में लगने वालें समय को महत्त्व देना।
- छात्र की प्रतिक्रिया पर संवेदनशील होना और निरंतर रिपोर्ट तैयार करना।
- 'फीडबैक' देना। जिससे छात्र सकारात्मक प्रगति कर सके।
- अध्यापकों को मूल्यांकन करते समय कुछ बातें जो भूल से भी नहीं करना चाहिए।
- छात्रों को योग्यता के आधार पर श्रेणी में बाँटना।
- बुद्धिमान और कमजोर के बीच तुलना
- नकारात्मक वक्तव्य देना।
- किसी भी तरीके से डराना।

निरंतर / सतत एवं व्यापक मूल्यांकन–

यह मूल्यांकन की ऐसी प्रणाली है जिसमें छात्रों के चहुँमुखी विकास के सभी पक्ष शामिल है। जिसकी विशेषता है कि एक ओर मूल्यांकन में निरंतर और व्यापक रूप से सीखने की प्रक्रिया का आकलन तथा व्यावहारिक रूप से समाज में सामंजस्य स्थापित करने का भी मूल्यांकन होगा। यहाँ निरंतरता/सतत पर विशेष बल दिया गया है ताकि अध्यापन अधिगम प्रक्रिया पूरे सत्र चलती है ताकि विद्यार्थी सहज रूप से सीख सके। इसमें मूल्यांकन की नियमितता अधिगम अंतरालों का निदान, सुधारात्मक उपायों का उपयोग स्वयं मूल्यांकन के लिए फीडबैक आदि बहुत जरूरी है। 'व्यापक' का तात्पर्य है शिक्षा के साथ-साथ सह शैक्षिक पसों को शामिल करना। क्षमताएँ, मनोवृत्तियाँ और सोच को पाठ्यक्रम के साथ-साथ विभिन्न गतिविधियों में प्रकट होता है। इसलिए जरूरी है शैक्षिक और सहशैक्षिक पाठ्यक्रम की जरूरत।

अभी तक हम जिन उद्देश्यों की चर्चा बार-बार करते आए हैं कि सीखने वी प्रक्रिया महत्वपूर्ण है, मूल्यांकन अध्यापन-अधिगम का अविभाज्य हिस्सा हो नियमित निदान, फीडबैक का महत्व समझा जाए आदि। इन्हीं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सी.सी.ई को लागू किया गया। जिसकी विशेषताएँ हैं–

- निरंतर मूल्यांकन से छात्र में सुधार सहज व सरल है। वह बोझ से मुक्त होकर अपनी क्षमता अनुसार कार्य करता है।
- छात्र विशेष की जरूरत को समझकर निदान प्रस्तुत किया जा सकता है।
- बच्चे स्वयं भी उपनी कमियों को जान सकेंगे और दूर कर सकेंगे। अध्यापक से ही नहीं अपने साधियों से भी बहुत कुछ सीख पाएंगे।
- छात्र की समझ, क्षमता को विकसित होने के अनेक अवसर मिलने से स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने की क्षमता का भी विकास होता है।
- इसके द्वारा विद्यार्थी का बौद्धिक, भावनात्मक, शारीरिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विकास सुनिश्चित किया जा सकता है। परीक्षा मूल्यांकन नहीं है यह केवल मूल्यांकन का साधन मात्र है। मूल्यांकन अध्यापन अधिगम प्रक्रिया का अविभाज्य हिस्सा है। इसे विभिन्न सोपानो में देखा जा सकता है।

पहले सोपान में विभिन्न साधनों/माध्यमों का प्रयोग करते हुए कई तरीकों से जानकारी एकत्र की जाती है। पर्यवेक्षण, वार्तालाप, चर्चा कार्य परियोजनाएँ आदि के द्वारा जानकारी जमा की जाती है।

दूसरे सोपान में इस जानकारी को अभिलेखित करने की आवश्यकता है। अध्यापन तथा अधिगम को सुधारने के लिए इनका पर्याप्त महत्त्व है। इसके लिए साक्ष्य के रूप में छात्र के कार्यों के नमूने संगृहीत किए जाए। रिपोर्टिंग में यह जरूरी है कि विभिन्न क्षेत्रों में छात्र की प्रगति दर्शाई जाए।

तीसरे सोपान में उपर्युक्त रिपोर्ट से अध्यापक, छात्र और माता-पिता मदद लेते हुए छात्र की उन्नति का प्रयास करेंगे। सीखने की प्रक्रिया में छात्र भी लाभान्वित होंगे तथा माता-पिता का सहयोग भी मिलेगा। अंतिम सोपान में अध्यापक अधिगम को बढ़ाने के लिए अभ्यास कार्य आदि का सहारा लेकर सुधार कार्य कराएगा।

अध्यापक को इन जानकारियों को एकत्र करते हुए सजग-सचेत रहना होगा कि जो भी सूचनाएँ एकत्र की है वे सही हैं और विद्यार्थी का हित केंद्र में है।

मूल्यांकन का मुख्य प्रयोजन अधिगम प्रक्रिया की प्रभावशीलता को बढ़ावा देना है। अधिगम एक निरंतर प्रक्रिया है अतः मूल्यांकन भी निरंतर होना चाहिए। छात्र को आत्मचिंतन का अवसर मिलेगा कि वह सही दिशा में जा रहा है या नहीं। उसे कहाँ कठिनाई काई वहाँ मजा आया.... आदि भी जान सकेगा। अध्यापक को भी समय और अपने छात्रों के हिसाब से गतिविधियाँ आयोजित करनी होंगी। शिक्षार्थी के पूर्वज्ञान को सुनिश्चित करने के लिए अध्यापक को कई उपकरणों और तकनीकों को अपनाना पडता है।

रचनात्मक मूल्यांकन का उपयोग अध्यापक द्वारा सौहार्दपूर्ण वातावरण में भयरहित छात्र की प्रगति के लिए किया जाता है। इसमें नियमित और व्याख्यात्मक फीडबैक द्वारा छात्र अपने प्रदर्शन को विश्लेषित कर सकते हैं और अपेक्षित सुधार ला सकते हैं।

रचनात्मक मूल्यांकन की विशेषताएँ-

- यह निदानात्मक तथा उपचारात्मक होता है।
- फीडबैक के द्वारा दिशा निर्देश देता है।
- अधिगम में सक्रिय भागीदारी हेतु मंच प्रदान करता है।
- अध्यापकों को अपने अध्यापन को छात्रों के अनुकूल बनाने में सहायता प्रदान करता है।
- अभिप्रेरण और छात्रों के स्वाभिमान जिनका कि अधिगम पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है पर मूल्यांकन के गंभीर प्रभाव का पता लगाता है।
- छात्रों को अपनी क्षमता को पहचानने में सहायता करता है और सुधार लाने का संकेत करता है।
- छात्रों के पूर्वज्ञ्ज्ञान और अनुभव को परस्पर जोड़ता है।
- छात्रों को अपने सहपाठियों की सहायता करने और उनसे सहायता की अपेक्षा रखने में सहयोग करता है।
- वर्ष में दो बार योगात्मक मूल्यांकन किया जाता है। यह एक ग्रेडेड परीक्षा है। यह एक निर्धारित समय में उपलब्धि के स्तर को प्रमाणित करता है।
- योगात्मक मूल्यांकन की विशेषताएं
- अधिगम का मूल्यांकन
- सत्र के अंत में यह जानना भी जरूरी है कि छात्र ने क्या सीखा है क्या नहीं।

- छात्र के कार्य का मूल्यांकन करने के लिए योगात्मक मूल्यांकन का सबसे पारंपरिक ढंग है।

रचनात्मक मूल्यांकन (संपूर्ण सत्र)

उपकरण	तकनीक
• वस्तुनिष्ठ सार	• परीक्षण
• लघु उत्तर	• अधिन्यास
• दीर्घ उत्तर	• प्रश्न मंच
• प्रश्न निर्माण	• प्रतियोगिताएँ
• प्रेक्षण समय-सारिणी	• परियोजनाएँ
• साक्षात्कार समय-सारिणी	• प्रश्न निर्माण
• जाँच सूची	• वाद-विवाद
• आकलन पैमाना	• व्याख्यान
• उपाख्यान रिकॉर्ड	• समूह चर्चा
• प्रलेख विश्लेषण	• विभिन्न गतिविधियाँ
• पोर्टफोलियसो विश्लेषण	

योगात्मक मूल्यांकन (सत्र की समाप्ति पर)

- वस्तुनिष्ठ प्रकार
- लघु उत्तर
- दीर्घ उत्तर

अध्यापक के कार्य में कुछ बाधाएँ भी आएंगी पर अध्यापक हर चुनौती को स्वीकार करता है। यह एसकी व्यावसायिक मांग है। रचनात्मक मूल्यांकन के लिए प्रत्ये क ़। में कम से कम तीन गतिविधियों का आकलन करना जरूरी है। अधिक गतिविधियाँ भी हो सकती है। कोशिश करनी चाहिए कि सभी ़। में अलग-अलग गतिविधियों को शामिल करना चाहिए। प्रत्येक गतिविधि का निर्णय लेकर विद्यार्थियों को उसकी सूचना पहले से यदि अपेक्षित हो तो देनी चाहिए लेकिन उसका आकलन पैमाना स्पष्ट कर देना चाहिए और उसी आध ार पर इर बच्चे का मूल्यांकन करना चाहिए। फीडबैक विद्यार्थी से लेना और देना दोनों जरूरी है। गतिविध ियों में विभिन्न भाषायी कौशलों को समाहित करना चाहिए। ़। में ही कक्षा कार्य और गृहकार्य का आकलन भी होगा।

अब कुछ पाठों को लेकर चर्चा की जाएगी कि कैसे किसी पाठ में गतिविधियों का समायोजन किया जा सकता है।

स्त्री शिक्ष के विरोधी कुतर्कों का खंडन

मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया है और शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न अंग है। भाषा मूल्यांन के लिए कक्षा में पाठ्य पुस्तकों के पाठों तथा जीवन से जुड़े अन्य विषयों से संबंधित विभिन्न क्रियाकलापों का आयोजन किया जा सकता है। क्रियाकलापों में छात्रों की रूचि, योगदान और किए गए कार्य के आधार पर उनके भाषायी विकास का आकलन किया जा सकता है।

क्षितिज भाग दो में शामिल महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित लेख 'स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' एक ऐसी रचना है जिसके माध्यम से लेखक ने उन रूढ़िवादी पुरातन पंथी विचारों का सखत विरोध किया है जो स्त्री-शिक्षा को व्यर्थ तथा समाज में होने वाले अनर्थ का कारण मानते हैं। आज स्त्री शिक्षा के प्रचार प्रसार से समाज में जो मुकाम हासिल किया है, उसे प्राप्त करने में ऐसे लेखकों और विवेकशील विचारकों का महत्वपूर्ण योगदान है।

इस पाठ के संदर्भ में निम्नलिखित गतिविधियों द्वारा छात्रों के भाषिक विकास का मूल्यांकन किया जा सकता हैं।

१. स्त्री शिक्षा के विरोधियों द्वारा दिए गए कुतर्कों तथा लेखक द्वारा उनका खंडन करने के लिए दिए गए तर्कों को अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।

आकलन के बिंदु होंगे-

- छात्र को विषय वस्तु का ज्ञान है। हाँ/नहीं
- प्रस्तुतीकरण प्रभावशाली है। हाँ/नहीं
- अपनी भाषा और शब्दावली का प्रयोग किया है। हाँ/नहीं
- सामाजिक समस्याओं (स्त्री शिक्षा) के प्रति नज़रिया और जागरूकता। हाँ/नहीं

यदि कक्षा में छात्रों की संख्या अधिक हो तो इस क्रियाकलाप को समूह में करवाया जा सकता है। चार-चार छात्रों का समूह बनाकर वे अपास में चर्चा करें और फिर प्रस्तुति करें।

२. स्त्री शिक्षा के प्रचार-प्रसार में अनेक समाज-सुधारकों का योगदान रहा है। उनके बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए और किसी एक पर प्रोजेक्ट तैयार कीजिए।

इस गतिविधि के लिए आकलन के बिंदु होंगे-

- छात्र ने विभिन्न स्रोतों से संबंधित विषय के बारे में जानकारी एकत्र की है। हाँ/नहीं
- संबंधित विषय के बारे में एकत्रित जानकारी पर्याप्त है। हाँ/नहीं
- छात्र को संकल्पना की समझ है। हाँ/नहीं
- उसकी प्रस्तुति में नवीनता या मौलिकता है। हाँ/नहीं

३. स्त्री शिक्षा पर एक नुक्कड़ नाटक तैयार कर उसे प्रस्तुत कीजिए।

इस गतिविधि के लिए कक्षा को तीन या चार समूहों में बाँटिए और उनसे नाटक की प्रस्तुती करवाइए। उन्हें दो-तीन दिन का समय दीजिए।

आकलन के बिंदु होंगे-

- छात्र ने नाटक की तैयारी में अपनी भूमिका निभाई है।
- छात्र का संप्रेषण कौशल प्रभावी है।

- प्रस्तुतिकरण प्रभावशाली है।
- अभिनय स्वाभाविक तथा जीवंत है।
- नाटक में नवीनता या मौलिकता है।

४. 'इस देश की शिक्षा प्रणाली अच्छी नहीं।' इस कथन के संदर्भ में आप शिक्षा प्रणाली में क्या और कैसा सुधार लाना चाहेंगे - इस बारे में एक लेख लिखिए।

आकलन के बिंदु होंगे-

- छात्र की अवलोकन-विश्लेषण की क्षमता
- विचारों की मौलिकता
- विचारों की तारतभ्याता
- विचारों की मौलिकता
- प्रस्तुतीकरण
- विषयानुकूल भाषा एवं शैली

२. एक कहानी यह भी

मन्नू भंडारी द्वारा रचित आत्मकथ्य का यह अंश लेखिका की आज़ादी की लड़ाई में भागीदारी तथा उसके विकसित होते व्यक्तित्व पर उसके पिता तथा कॉलेज की प्राध्यापिका के व्यक्तित्व के प्रभाव का सहज और सुंदर चित्रण करता है। छोटे शहर की युवा होती लड़की के चारित्रिक गुणों उत्साह, संगठन-क्षमता, परिस्थितियों की विश्लेषण क्षमता तथा उसकी साहित्यिक रूचियों के निर्माण के विभिन्न पड़ावों को बहुत सुंदर ढंग से उकेरा गया है।

१. पाठ पढ़कर आपके मन में मन्नू भंडारी जी से मिलने तथा उनसे बातचीत करने की इच्छा होती है। मन्नू जी स बातचीत करने के लिए पाठ से संबंधित जानकारी के आधार पर अपनी जिज्ञासा पूरी करने के लिए प्रश्नों की एक सूची तैयार करें। कक्षा को समूहों में बाँटिए। सभी छज्ञत्र अपनी-अपनी प्रश्न सूची पर समूह में चर्चा करें और प्रश्नों की एक सामूहिक सूची तैयार करें।

गतिविधि कराने से पहले छात्रों को तीन-चार दिन का समय दें ताकि वे मन्नू भंडारी जी की कुछ रचनाओं को पढ़ सकें। 'एक कहानी यह भी' नामक पुस्तक पढ़ें।

आकलन के बिंदु होंगे-

- पाठ में वर्णित तत्कालीन सामाजिक तथा राजनैतिक परिवेश की समझ
- प्रश्नों में विविधता और मौलिकता
- प्रश्नों की रचना तथा भाषा सहज, सरल और स्पष्ट है या नहीं
- चिंतन तथा विश्लेषण की योग्यता

२. श्रवण बोधन - शिक्षक किसी पत्र-पत्रिका में प्रकाशित समसामयिक विषय पर प्रकाशित लेख या रिपोर्ट के एक अंश का कक्षा में सस्वर वाचन करें। संबंधित सामग्री पर आधारित वस्तुपरक प्रश्नों की एक-एक प्रति पहले की कक्षा में वितरित कर दें। छात्र ध्यान पूर्वक सुनें और प्रश्नों के उत्तर दें।

इस गतिविधि के आकलन बिंदु होंगे-

- ध्यानपूर्वक सुना या नहीं
- सुनकर कही हुई बात को समझा या नहीं
- तथ्यों तथा बातों को ध्यान में रखा या नहीं

३. 'महानगरों में पड़ोस कल्चर' विषय पर समूह चर्चा कराएँ। कक्षा को पाँच समूहों में बाँटे'। प्रत्येक समूह का आवलोकन करें।

आकलन के बिन्दु होंगे।-

- छात्र ने समूह में अपनी भूमिका निभाई
- छात्र नेतृत्व कौशल प्रदर्शित करता है।
- विषय - वस्तु की जानकारी है
- अपनी बात तर्क सहित, उदाहरण सहित प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है।
- उचित शब्दावली और भाषा का प्रयोग करता हैं
- दूसरों को अपनी बात कहने का अवसर देता है

४. आपकी भी कोई विशेष रूचि के पनपने के कारणों तथा उसके प्रेरक तत्वों के बारे में आत्मकथात्मक शैली में लिखिए।

इस गतिविधि के आकलन बिंदु होंगे–

- विचारों की तारतम्यता
- प्रस्तुतीकरण रोचक और प्रभावशाली है– वाक्य रचना, अनुच्छेद निर्माण आदि
- उपयुक्त शब्दावली तथा भाषा का प्रयोग
- स्वयं को जानने–पहचानने की क्षमता

अट नहीं रही है।

युर्यकांत त्रिपाठी 'निराली जी' की कविता 'अट नहीं रही है' प्रकृति में व्याप्त फागुन की सुंदरता तथा मादकता को चित्रिता करती है।

१. विभिन्न ऋतुओं से संबंधित कविताओं का संग्रह कीजिए। कक्षा के समूहों में बाँटिए तथा प्रत्येक समूह से अलग-अलग ऋतुओं से संबंधित कविताओं का संग्रह करवाइए। प्रत्येक समूह के सदस्य कक्षा में उन कविताओं का सस्वर लयपूर्वक पाठ करें।

आकलन के बिंदु होंगे-

- समूह ने उसे दी गई ऋतु से संबंधित कविताओं का ही चयन किया
- प्रत्येक समूह ने अलग-अलग कवियों की रचनाओं का संग्रह किया
- उचित तय, तान तथा सही उच्चारण से कविता पाठ किया
- कविता पाठ से आनंद की अनुभूति हुई

२. कक्षा को समूहों में बाँटिए तथा उनके नाम किसी ऋतु के नाम पर रखिए।

प्रत्येक समूह अपने नाम के अनुरूप चार्ट पेपर पर चित्र बनाए तथा एक चार्ट पर उस ऋतु से संबंधित पाँच बातें लिखे। समूह कविता की रचना भी कर सकता है।

सभी समूह अपने -अपने चित्र प्रदर्शित करते हुए उस ऋतु के संबंध में लिखी बातें (गद्रू या पद्य) पूरी कक्षा के सामने प्रस्तुत करें।

इस गतिविधि के आकलन बिंदु होंगे-

- समूह के सभी सदस्यों की भागदारी
- चित्रांकन में कल्पनाशीलता
- गद्य या पद्य की भावानुकूल रचना एवं प्रस्तुती
- ऋतृओं के अनुरूप शब्दावली का प्रयोग

नौबतखाने में इबादत

लेखक यतींद्र मिश्र ने प्रस्तुत लेख मे मशहूर शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व, उनकी रूचियों और संगीत साधना का एक सुंदर शब्द चित्र बड़े रोचक ढंग से उकेरा है। खाँ साहब का पूरा जीवन उनकी सुरों की साधना और इबादत तथा उनके काशी प्रेम की कहानी कहता है।

१. पत्र लेखन

पाठ तथा अन्य स्रोतों से प्राप्त जानकारी के आधार पर किसी अन्य राज्य में रहने वाले अपने एक मित्र। सखी को काशी प्राचीन संस्कृति की जानकारी देते हुए एक पत्र लिखिए।

इस गतिविधि के आकलन बिंदु होंगे–

- विषय वस्तु का ज्ञान
- पत्र के प्रारूप की जानकारी
- भाषा–शैली (वाक्य संरचना, वर्तनी, अनुच्छेद निर्माण)
- प्रस्तुतीकरण

२. प्रश्नोत्तरी

इस क्रियाकलाप के लिए बच्चों को तैयारी करने के लिए दो–तीन दिन का समय दें। भारतीय संगीत, वाद्‌य यंत्र, संगीतकार तथा उनके विशिष्टक्षेत्रों, उनके द्‌वारा प्राप्त सम्मान तथा अवार्ड, राग–रागिनियों से संबंधित जानकारी बच्चे विभिन्न स्रोतों से एकत्रित करके स्वयं को प्रश्नोत्तरी के लिए तैयार करें।

कक्षा को चार समूहों मे विभातिज करें और उनके बैठने की व्यवस्था उसी प्रकार हो। दो छात्र बार्ड पर प्रत्येक समूह के अंकों को लिखेंगे। शिक्षक प्रश्नावली पहले से तैयार कर लें। छात्रों को प्रश्नोत्तरी के नियम तथा अंक निर्धारण के नियम समझा दें।

एक छात्र को समय–सूचना देने के लिए नियुक्त करें। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर १० सैंकड के भीतर देना होगा वरना प्रश्न दूसरे समूह को पास हो जाएगा।

इस क्रियाकलाप के आकलन बिंदु होंगे–

- छात्रों को पर्याप्त जानकारी है
- निश्चित समय में सही उत्तर देते हैं
- प्रत्येक समूह के सभी छात्र भागीदारी करते हैं
- छात्रों में आपसी तालमेल है।
- सबसे अधिक अंक प्राप्त करने वाला समूह विजयी घोषित होगा।

३. उर्दू शब्दों का उच्चारण तथा अर्थ

इस क्रिया कलाप के लिए १५ मिनट का समय छात्रों को दें। शिक्षक पाठ में प्रयुक्त २५ उर्दू के शब्दों को बोर्ड पर लिख दें। छात्रों से अपनी–अपनी नोट बुक पर उन शब्दों के अर्थ लिखने को कहें।

समय समाप्त होने पर पेपर एकत्रित कर लें। प्रत्येक छात्र से बोर्ड पर लिखे शब्दों को पढ़वाएँ।

आकलन के बिंदु होंगे-

- छात्र शब्दों का सही उच्चारण करता है।
- छात्र को शब्दों के अर्थ ज्ञान हैं।
- शब्दों का सही उच्चारण करने तथा सही अर्थ लिखने वाले की कक्षा में प्रशंसा करें तथा दुसरों प्रेरित करें।

४. परिचय कराना

कल्पना कीजिए कि अलग-अलग क्षेत्रों (खेल, सिनेमा, संगीत, चित्रकला, राजनीति आदि) का कोई प्रसिद्ध व्यक्ति का परिचय एक अनुच्छेद में लिखिए।

इस गतिविधि के आकलन बिंदु होंगे-

- प्रभावपूर्ण उपयुक्त शब्दावली का प्रयोग
- संपूर्ण व्यक्तित्व की झलक की प्रस्तुती
- सजी-सँवरी विनम्र एवं शिष्ट भाषा का प्रयोग लेखन कौशल

सवैये रसखान

गतिविधि १

जन्माष्टमी उत्सव–समूह चर्चा

(कक्षा को चार समूहों में विभाजित किया जा सकता है।)

समूह १

१. कृष्ण के जन्म की कथा व महत्व के बारे में बताना।

२. कृष्ण के कार्यों–वाँसुरीवादन, गोपालन, राक्षसों का बध, गुरूकुल आदि से सम्बन्धित घटनाएँ व तथ्य बताना

३. पाठ में आई अंतर्कथाओं व अन्य सम्बन्धित पौराणिक घटनाएँ सुनाना

४. जन्माष्टमी उत्सव में होने वाली घरों व मंदिरों की सजावट, झाँकियाँ, कीर्तन, कृष्ण लीला का मंचन व अन्य सम्बन्धित सांस्कृतिक कार्यक्रमों के बारे में बताना।

उद्देश्य–

- वाक व श्रवण कौशल विकसित करना।
- श्री कृष्ण की बहुमुखी प्रतिभा की पहचान व सराहना।
- पाठ से सम्बन्धित ज्ञान को मनोरंजक रूप से बढ़ाना।
- छात्रों को समान प्रतिभागिता के लिए प्रेरित करना।
- छात्रों में आत्मविश्वास बढ़ाना।
- स्वस्थ प्रतियोगिता की भावना विकसित करना।
- भारतीय संस्कृति की पहचान
- धार्मिक त्योहारों के विषय में अधिक जानने की जिज्ञासा उत्पन्न करना।
- सामूहिक चर्चा के बाद सभी समूह परिचर्चा के रूप में प्रस्तुति करेंगे।

मूल्यांकन के आधार	अंक
• सामग्री विषयानुरूप थी या नहीं।	☐
• प्रत्येक छात्र का आप्तमविश्वास, सहयोग व समान प्रतिभागिमा	☐
• प्रस्तुतीकरण–नियोजत व परस्पर तारतम्यपूर्ण था या नहीं	☐
• उच्चारण, प्रभावशाली अभिव्यक्ति, सुनने का धैर्य	☐

सवैये

गतिविधि २

सस्वर लनयात्मक वाचन

उद्देश्य

- वाचन श्रवण कौशल विकसित करना।
- काव्य पाठ में रूचि जागृत करना।
- भावपूर्ण व लयात्मक गीत रचना के लिए प्रेरणा देना।
- एकाग्रचित हो कार्य कने का अभ्यास करना।
- मनोरंजक गतिविधि से अन्य भक्त कवियों की रचनाएँ पढ़ने व गायन में अभिरूचि जगाना।
- भक्त कवियों का इष्ट के प्रति समर्पण भाव दर्शाना।
- आध्यात्मिकता की ओर रूझान उत्पन्न करना।
- लयात्मक पाठ में आरोह-अवरोह का ज्ञान करवाना।

मूल्यांकन के आधार बिंदु

मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक
• आत्मविश्वास	☐
• गंभीरता से प्रभावशाली भावपूर्ण लयात्मक पाठ	☐
• उच्चारण की स्पष्टता व शुद्धता	☐
• गेंयता - मधुर, लय, तुक	☐
• भावाभिव्यक्ति में सफलता	☐

गतिविधि ’ चाई बनाना

अन्य कृष्णभक्त कवियों यथा–सूर, मीरा, देव आदि की रचनाएँ ढूँढ कर चार्ट पर लिखे अथवा उनके जीवन से सम्बन्धित किसी विशेष घटना को लिखे। कवि का चित्र बनाएँ अथवा लगाएँ।

उद्देश्य–

- खोजी प्रवृति को जगाना।
- चार्ट पर सीधा व सधा हुआ लेखन।
- अन्य कृष्ण भक्त कवियों की रचनाओं की ओर रूझान जागृत करना।
- काव्य लेखन व घटना वर्णन में बर्तनी की शुद्धता का ध्यान रखना।

मूल्यांकन	**अंक**
• सुंदर व स्पष्ट लेख	☐
• वर्तनी की शुद्धता	☐
• रचना का चयन	☐
• कवि का चित्र व चार्ट की सजावट	☐

बच्चे काम पर जा रहे हैं।

गतिविधि – लघु नाटिका के रूप में पाठ का प्रस्तुतीकरण। बाल श्रम के विभिन्न रूप दर्शाते हुए (दाबे, सड़क व पटाखे के कारखानों में काम करते बच्चे) उनके दुख दर्द को दर्शाते हुए उनकी समस्याओं व समाधान की प्रस्तुति।

उद्देश्य

- बाल श्रम की सामाजिक बुराई की ओर ध्यान आकर्षित करना।
- बच्चों के शोषण के प्रति छात्रों को संवेदनशील बनाना।
- छात्रों को बाल श्रमिक के सामाजिक जीवन की जीवंत समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाना।
- बाल श्रम निषेध के कानून से अवगत करवाना।
- बाल शोषण के विरोध मे अपना योगदान देना।
- छात्रों मे चिंतन मनन की क्षमता को बढ़ावा देना।
- उनको अपना सामाजिक दायित्व व अहसास दिलाना।
- बाल श्रमिक के प्रति दृष्टिकोण में सुधार लाना।
- उनके प्रति सहानुभूति व सहयोग की भावना
- पात्रों का चयन संवाद लेखन व बोलने की कला व अभिनय क्षमता को विकसित करना

मूल्यांकन के आधार बिंदु	अंक
• नाटिका का आलेख कितने प्रभावशाली ढंग से लिखा गया	☐
• छात्रों ने कितनी गंभीरता से नाटिका का प्रस्तुतीकरण किया	☐
• क्या छात्रों ने पात्रों के भावों व मनः स्थिति को संप्रेषित किया।	☐
• पात्रों का चयन उचित था या नहीं	☐
• नाटिका में कितने तरह के बाल श्रम को दर्शाया गया	☐
• संवाद बोलने में स्पष्टता व उच्चारण	☐
• उनके ऊपर हो रहे अत्याचारों को कितने मार्मिक ढंग से दिखाया	☐
• समाधान क्या दिया गया? समाधान की व्यावहारिकता	☐

गतिविधिः

विद्यालय जाने वाले बच्चे और एक बाल श्रमिक के बीच संवाद शैली में वार्तालाप

उद्देश्य

- बाल श्रम जैसी सामाजिक बुराई के प्रति जागरूकता लाना।
- बाल श्रमिक के जीवन की विवशताओं (खेल-कूद, मनोरंजन पुस्तको, बाल सुलभ क्रियाकलापों से काई सरोकार नहीं) से अवगत कराना।
- एक विद्यार्थी व अपढ़ बाल श्रमिक के जीवन का तुलनात्मक अध्ययन।

- छात्र शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा को स्वयं के लिए वरदान समझें और उसका दुरूपयोग न करें।
- बाल श्रम गैरकानूनी है और इसके लिए दण्ड का प्रावधान भी है, यह जागरूकता फैलाना
- निर्धन बच्चो व उनके माता पिता को अपने पढ़ने के संवैधानिक अधिकार के प्रति सचेत करना।
- संवाद लिखने के लिए आपस में विचार विमर्श व सहयोग की प्रेरणा देना।
- उचित स्वराघात के साथ उचित संवादों का स्पष्ट वाचन।

मूल्यांकन

- संवाद लेखन की कला
- दोनो प्रकार के बालकों की जीवन शैली में अंतर स्पष्ट हुआ या नहीं।
- श्रोताओं को वार्तालाप संवेदनशील लगा या नहीं।

गतिविधि–बाल श्रम पर स्लोगन लिखे।

उद्देश्य

- सृजनात्मकता का विकास।
- कल्पना शक्ति का विकास।
- काव्य रचना के कौशल को निखारना।
- तुकान्त कविता की रचना करना सीखना।
- बाल श्रम के प्रति संवेदनशीलता व जागरूकता उत्पन्न करना।

मूल्यांकन बिंदु	**अंक**
• काव्य रचना का कौशल	☐
• विषय की सटीक अभिव्यक्ति	☐
• मनोभावों को स्वर मैत्री का ध्यान रखते हुए शब्द रूप देने की क्षमता	☐
• स्लोंगन का उचित वाचन	☐
• मौलिकता	☐

सर्वोदय कन्या विद्यालय, अवन्तिका, राहिणी की छात्राओं द्वारा बनाए गए स्लोंगन।

बच्चों को न करने देंगे श्रम।
हमने लिया है आज यह प्रण।।

यदि करोगे बच्चों का शोषण।
फिर भारत का नाम न होगा रोशन।।

पढना है बच्चो का अधिकार
बालश्रम करवा न बनो पाप के भागीदार।।

बच्चे देश की शान हैं, बच्चे देश की आन हैं।
इन्हें शिक्षित करना है जरूरी, नहीं ता रह जाएगी तरक्की अधूरी।।

बच्चो से काम करवाओगे।
देश का नाम गवाओगे।।

बच्चों से ना काम कराओं।
मानवता को यूँ न गवाओं।।

पढ़ने–लिखने की उम्र में करवाते साफ सफाई।
क्या गांधी, नेहरू ने हमें यही है सीख सिखाई।।

पाठ – योजना

कक्षा – नवीं

विषय – हिंदी 'ए' कोर्स

शीर्षक – रसखान के सवैये

समान्य उद्देश्य

- साहित्य के पठन और रसास्वादन की क्षमता विकसित करना।
- साहित्य के अध्ययन से जीवन–मूल्यों के प्रति जागरूकता पैदा करना।
- भारतीय संस्कृति के प्रति गौरव की भावना विकसित करना।

विशिष्ट उद्देश्य

- सवैये का भावानुरूप उचित लय–गति के साथ वाचन करना।
- सवैये में प्रयुक्त शब्दों के अथ व भाव को प्रसंगानुकूल समझना।
- सवैये के मुख्य भाव व काव्य–सौन्दर्य को जानना।

पूर्व ज्ञान

भक्तिकाल के कृष्णमार्गीय शाखा के सुप्रसिद्ध कवि–कवयित्री सूरदास, मीराबाई आदि के विषय में विद्यार्थियों को पहले से ही ज्ञान है। इन विशिष्ट कवियों ने कृष्ण की लीलाओं का सुंदर–गान अपने पदों में किया है।

प्रस्तावना प्रश्न–

१. भक्तिकाल के प्रमुख कवियों के नाम बताइए।

२. भक्तिकाल में श्री कृष्ण से संबंधित पदों का गायन किन–किन कवियों ने किया है?

३. ब्रजभाषा में रचना करने वाले कौन–कौन से कवि हैं?

उद्देश्य कथन–

आज हम भक्तिकाल के सुप्रसिद्ध कवि, श्रीकृष्ण के अनन्य उपासक रसखान का भक्ति से संबंधित सवैये का अध्ययन करेंगे। प्रथम सवैये में रसखान जी ने कृष्ण जी व ब्रजभूमि के प्रति अपने एकनिष्ठ प्रेम व भक्ति–भावना को प्रकट किया है।

आदर्श–पठन–अध्यापिका द्वारा सवैये का आदर्श–सस्वर वाचन।

अनुकरण–पठन–विद्यार्थियों द्वारा सस्वर वाचन

श्यामपट् कार्य

ऐसे कौन से शब्द आपको अपरिचित लगते हैं जिनसे संदर्भ, अर्थ-भाव समझने में कठिनाई अनुभव होती है?

शब्दार्थ

शब्द	**अर्थ**
मानुष	मनुष्य
ग्वारन	ग्वालों के
नित	नित्य
धेनु	गाय
मंझारन	मध्यमें
छत्र	छाता
पुरंदर	इंद्र
खग	पक्षी
कालिंदी	यमुना
कूल	किनारा

अध्यापिका कथन–

सवैये की व्याख्या, मूलभाव र रचनात्मक सौंदर्य स्पष्ट करना।

सतत् मूल्यांकन के लिए विद्यार्थियों को अभ्यास-कार्य पत्र दिया जाएगा जिसमें पद्यांश पर बहु-वैकल्पिक प्रश्न दिए जाएँगे। विद्यार्थी स्वयं पढ़कर उत्तर लिखेंगे। तत्पश्चात् शुद्ध-अशुद्ध उत्तरों की जाँच की जाएगी।

गृह कार्य

अन्य सवैयों के भी बहु-वैकल्पिक प्रश्न बनाने के लिए प्रेरित करना। अलंकार संबंधी, पर्यायवाची शब्द छाँटना।

रसखान के सवैये

अभ्यास - कार्य
कक्षा - नवीं
विषय - हिंदी 'ए' कोर्स

१. निम्नलिखित सवैये को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए–

(क) मानुष हौं तो वही रसखानि, बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वार जो पसु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मंझारन पाहन हौं तो वही गिरि को, जो कियो हरि छत्र पुरंदर धारन जो खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदी कूल कदंब की डारन

१. रसखान ब्रजभूमि के प्रति कैसा भाव प्रकट करते हैं?

१. क्रोध २. दुख ३. ईर्ष्या ४. अनुराग

उत्तर

२. मनुष्य के रूप में जन्म लेने पर रसखान कहाँ निवास करना चाहते हैं?

१. गिरनार पर्वत २. कैलाश पर्वत ३. गोवर्धन पर्वत ब्रजभूमि में

उत्तर

३. रसखान पक्षी बनने पर यमुना के किनारे किस पेड़ पर बसेरा करना चाहते हैं?

१. कदंब के पेड़ पर २. पीपल के पेड़ पर ३. नीम के पेड़ पर ४. आम के पेड पर

उत्तर

४. 'कालिंदी कूल कदंब की डारन'–पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार है

१. रूपक २. उत्प्रेक्षा ३. यमक ४. अनुप्रास

उत्तर

५. गोवर्धन पर्वत को श्री कृष्ण ने अपनी अँगुली पर धारण किया था

१. ब्रह्म के कोप से बचाने के लिए

२. हनुमान के कोप से बचाने के लिए

३. इंद्र के कोप से बचाने के लिए

४. देवी भगवती के कोप से बचाने के लिए

उत्तर

पाठ – योजना

कक्षा – नवीं

विषय – हिंदी 'ए' कोर्स

शीर्षक – मेघ आए

सामान्य उद्देश्य

- साहित्य के माध्यम से विद्यार्थियों के हृदय में हिंदी भाषा के पठन, रसास्वादन व सराहना संबंध ी क्षमता को विकसित करना।
- भारतीय संस्कृति का ज्ञान मिलना और गौरव की भावना को विकसित करना।

विशिष्ट उद्देश्य

- मेघ आए कविता का भावानुसार उचित लय-गति के साथ वाचन करना।
- ग्रामीण संवेदना के साथ शहरी मध्यवर्गीय जीवन बोध को समझना।
- प्रकृति सौन्दर्य का आनन्द लेना और काव्य के सौन्दर्य को जानना।

पूर्व ज्ञान

विद्यार्थी प्रकृति-सौन्दर्य की कविताएष इससे पूर्व पढ़ चुके है। भारत की विभिन्न ऋतुओं, प्रभाव का ज्ञान है। सर्वेश्वर दयाल ने 'मेघ आए' कविता में प्रवृति का अद्भुत वर्णन किया है।

दृश्य-सामग्री

बादलों से संबंधित कोई चित्र

प्रस्तावना प्रश्न

१. भारत की ऋतुओं के नाम बताइए।

२. ऋतुओं का राजा और रानी किसे माना जाता है?

३. वर्षा ऋतु के आने पर प्रकृति में क्या प्रभाव दिखाई देता है?

उद्देश्य कथन

आज हम आधुनिक युग के सुप्रसिद्ध कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की कविता 'मेघ आए' पढ़ेंगे। इसमें कवि ने मेघों के आने की तुलना सुसज्जित प्रवासी अतिथि से की है। दामाद के आने पर गाँव मे उल्लास का वातावरण बनता है, एक घर का दामाद मानों पूरे गाँव का दामाद है, इसी प्रकार कवि ने बादलों को भी मेहमान का रूप माना है।

आदर्श-पठन-अध्यापिका/अध्यापक द्वारा कविता का आदर्श सस्वर वाचन।

अनुकरण-पठन-विद्यार्थियों द्वारा सस्वर वाचन

श्यामपट्‌-कार्य

कविता-पाठ करते समय आपको कौन-कौन से शब्द अपरिचित लग रहे हैं, जिनका अर्थ आप नहीं जानते?

शब्दार्थ

बयार	-	हवा
पाहुन	-	मेहमान
सँवर के	-	अच्छी वेशभूषा धारण करके
बाँकी चितवन	-	तीखी या पैनी नज़र
ठिठकी	-	रूक गई
जुहार	-	आदरपूर्वक नमस्कार
सुधि लीन्हीं	-	याद किया
अकुलाई	-	व्याकुल
भटारी	-	पक्की, बहुमंज़िला इमारत

अध्यापिका / अध्यापक कथन

कवि ने बादलों का मेहमान के समान बताया है। पूरे साल भर के इंतजार के बाद जब बादल आए, ग्रामीण लोग बादलों का स्वागत उसी प्रकार करने लगे जिस प्रकार कोई अपने मेहमान (दामाद) का स्वागत करता है। सतत्‌ मूल्यांकन के लिए कुछ प्रश्न पूछे जायेंगे-

प्रश्न-

१. बादल कैसे आए?

२. आकाश में मेघ छाने पर क्या-प्रभाव दिखाई देता है?

३. 'पाहुन' के दो समानार्थक शब्द बताइए।

अध्यापिका कथन-

बादलों के आने पर हवा चंचल बालिका की तरह आगे-आगे चलने लगी। मेघों को देखने के लिए सभी उतावले होकर घरों क दरवाजे खिड़कियाँ खोलने लगे। आँधी चलने लगी, धूल इधर-उधर भागने लगी जैसे गाँव की लड़की मेहमान के आगे-भागे घाघरा को उठछाकर (संभालती हुई) भागती है, नाचती है।

मूल्यांकन संबंधी प्रश्न

१. बादलों के आगे'आगे नाचती हुई कौन चल रही है?

१. रात्रि २. हवा ३. वर्षा ४. तितली

२. 'पाहुन ज्यों ----- शहर के' में कौन-सा अलंकार है?

१. उत्प्रेक्षा २. उपमा ३. रूपक ४. अनुप्रास

३. बादल कैसे आए हैं?

१. सँवर के २. बन-ठन के ३. गाते हुए ४. ठिठोली करते हुए।

अध्यापिका कथन – कविता के मूल-भाव को स्पष्ट किया जाएगा।

गृह कार्य – कविता के आधार पर बादल संबंधी स्वरचित कहानी-लेखन, बहु-वैकल्पिक प्रश्न बनाने के लिए प्रेरित करना।

पाठ–योजना

कक्षा–नवीं

विषय–हिंदी 'ए' कोर्स

शीर्षक – 'कैदी और कोकिला'

सामान्य उद्देश्य

- साहित्य के पठन, विभिन्न विधाओं के पठन के प्रति रूचि जागृत करना।
- भारतीय संस्कृति के प्रति गौरव की भावना विकसित करना।
- साहित्य के अध्ययन से जीवन–मूल्यों क प्रति जागरूकता उत्पन्न करना।

विशिष्ट उद्देश्य

- विद्यार्थियों के हृदय में देश–भक्ति, प्रेम को जागृत करना।
- एक संवेदनशील नागरिक बनने की इच्छा जागृत करना।
- स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति श्रद्धा–भाव जागृत करना।

पूर्व–ज्ञान – विद्यार्थियों ने सुभद्रा कुमारी चौहान, रामधारी सिंह 'दिनकर' आदि की देशप्रेम संबंधी कविताएँ पढ़ी हैं।

देशभक्तों ने भारत को स्वतंत्र कराने के लिए कितनी यातनाएँ सही हैं, इसका ज्ञान भी विद्यार्थियों को है।

दृश्य–श्रव्य सामग्री

अनेक स्वतंत्रता सेनानियों के चित्रों का चार्ट या देश–प्रेम से संबंधित कोई गीत सुनाना।

प्रस्तावना प्रश्न

१. इस चित्र में कौन–कौन से स्वतंत्रता सेनानिों की क्या भूमिका रही?

२. देश को स्वतंत्र कराने में इन स्वतंत्रता सेनानियों की क्या भूमिका रही?

३. स्वतंत्रता सेनानियों को किन कष्टों का सामना करना पड़ा?

४. किन्ही प्रसिद्ध जेलो का नाम बताइए।

उद्देश्य कथन–आज हम माखन लाल चतुर्वेदी की राष्ट्रीय–भावना से ओत–प्रोत कविता–कैदीर और कोकिला' पढ़ेंगे। इसमें कवि ने अंग्रेजी–शासन द्वारा किए गए अत्याचारों एवं जेल में कैदियों द्वारा भोगी जाने वाली यातनाओं का वर्णन किया है। कवि उदास है और मन का दुख, असंतोष कोयल पर प्रकट करता है।

आदर्श पठन – अध्यापिका/अध्यापक द्वारा कविता का भावानुसार वाचन।

अनुकरण पठन – विद्यार्थियो द्वारा उचित

आरोह – अवरोह के साथ, भावानुसार वाचन

श्यामपट् कार्य

कविता-पाठ करते समय आपको कौन-कौन से शब्द अपरिचित लग रहे हैं जिनसे संदर्भ, अर्थ-भव समझने में कठिनाई अनुभव होती है?

शब्दार्थ

बटमार	-	रास्ते में यात्रियों को लूटने वाला
हिमकर	-	चंद्रमा
कालिमामयी	-	अंधकार वाली
आली	-	सखी, सहेली
वेदना	-	कष्ट
हूक	-	दर्द भरी टीस
मृदुल	-	मीठा, कोमल
वैभव	-	समूद्रधि, ऐश्वर्य
दावानल	-	जंगल की आग
चर्रक	-	चर्र चर्र की आवाज़
मोट	-	पुर, चरसा
जुआ	-	बैलों के कंधे पर रखी जाने वाली लकड़ी।

अध्यापिका अध्यापक कथन

कवि स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होकर जेल गए। वहाँ उन पर बहुत अत्याचार किए जाते थे। वह रात्रि में कूकने वाली कोयल से प्रश्न पूछते हैं कि वो अद्र्ध रात्रि में कूक-कूक कर क्या गा रही है? क्या संदेश दे रही हैं? अंग्रेजी हुकूमत के समस्त अत्याचारों का वर्णन करते हैं।

मूल्यांकन संबंधी बहु वैकल्पिक प्रश्न

१. गीत कौन गा रहा है?

१. कैदी २. गीतकार ३. कवि ४. जेलर

२. कारागृह में कवि को किनके बीच में रहना पड़ता है?

१. पशुओ के बीच में २. पक्षियो के बीच में ३. चोर डाकुओं के बीच में ४. कोई नहीं

३. 'कोकिल' का तद्भव शब्द बताइए

१. कौआ २. कोयल ३. मैना ४. कोई नहीं।

अध्यापिका कथन

कवि पूछते हैं कि कोयल! तुम उनके दुख से दुखी होकर चीख-चीखकर गा रही हो? कवि कोयल और अपने जीवन की विषमता का वर्णन करते हैं।

मूल्यांकन संबंधी प्रश्न

- कवि ने हथकड़ियों को क्या कहा है?
- मधुर विद्रोह का बीज कौन बो रहा है?
- कवि ने किन यातनाओं का वर्णन किया है?

अध्यापिका कथन – कविता के मूल-भाव को स्पष्ट किया जाएगा।

गृहकार्य – कविता के आधार पर 'स्वतंत्रता सेनानियों का योगदान' विषय पर अनुच्छेद लिखने के लिए प्रेरित करना।